SRJIS

Online ISSN 2278-8808
Print ISSN 2319-4766

GLOBALLY INDEXED
IMPACT FACTOR
SJIF 2018
6.371

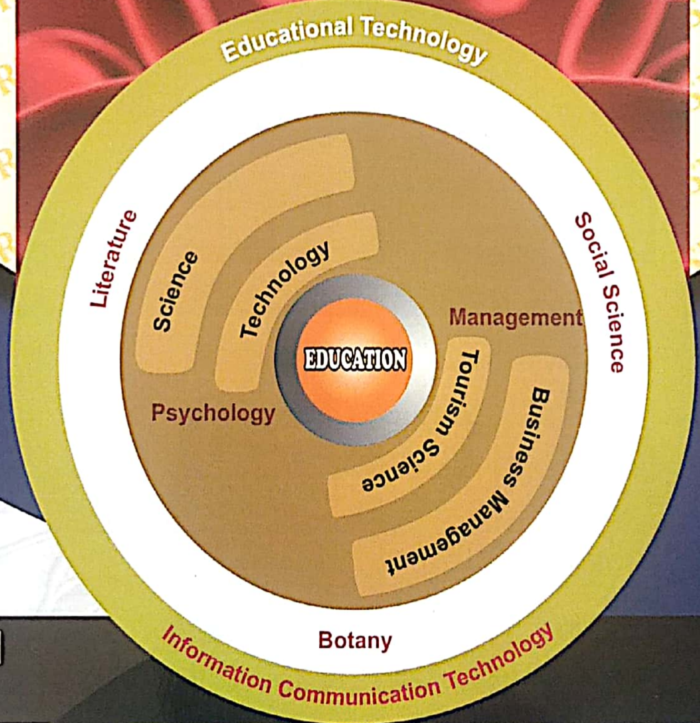

An International Peer Reviewed

Referred Quarterly

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

OCT-DEC, 2018. VOL. 7, ISSUE -37

EDITOR IN CHIEF : YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph.D.

IMPACT FACTOR SJIF 2018 = 6.371
ONLINE ISSN 2278-8808

PRINTED ISSN 2319-4766

AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, QUARTERLY

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

EDITOR IN CHIEF

YASHPAL D. NETRAGAONKAR, Ph. D.
Associate Professor, MAAER'S MIT School of Education & Research, Kothrud, Pune.

EDITOR'S

OMPRAKASH H. M., Ph. D.
Professor & Head Sri Mrugharajendra Swamiji B. Ed. & M. Ed. College Reshmi Vidya Bhavan Sarswatipur, Behind GUK Kusunoor Road Gulbarga, Karnataka

JACINTA A. OPARA, Ph. D.
Center for Environmental Education Universidad Azteca, Chalco-Mexico

NISHIKANT JHA, Ph. D.
Thakur Art,Commerce & Science College Kandiwali West,Thakur village, Mumbai

SHABIR AHEMAD BHATT, Ph. D.
Associate Professor, Department of Education, University of Kashmir, India

VAIBHAV G. JADAHV, Ph. D.
Assistant Professor, Department of Education & Extension, University of Pune.

Amitesh Publication & Company,
TCG's, SAI DATTA NIWAS, S. No. 5+4/ 5+4, D-WING, Flat No. 104, Dattnagar, Near Telco Colony, Ambegaon (Kh), Pune. Maharashtra. 411046. India.
Website: www.amiteshpublishers.in, www.srjis.com
Email: srjisarticles16@gmail.com

Scanned with CamScanner

SJIF 2018 = 6.371
ONLINE ISSN 2278-8808

PRINTED ISSN 2319-4766

An International, Peer Reviewed, & Referred Quarterly
Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

OCT-DEC, 2018, VOL-7, ISSUE-37

1. AWARENESS OF E-MARKETS AMONG THE PEOPLE OF KURNOOL CITY OF A. P.
H. S. Vyas & Kumardatt Ashok Ganjre (1-9)

2. MULTICULTURALISM AND INDIAN EDUCATIONAL POLICIES
Smita Phatak & Prof. Suhasini Bhujbal (10-15)

3. REFORMING THE MILITARY INSTITUTIONS AND NATIONAL SECURITY STRATEGY IN THE ASIAN REGION
H. K. Pandey & Col Shantonu Roy (16-24)

4. WOMEN ENTREPRENEURSHIP IN RURAL AREA (Special reference of Maharashtra)
Prof. Rajaram Nathaji Wakchaure (25-27)

5. ROLE OF GOVERNMENT IN THE "IMPLEMENTATION AND ENHANCEMENT OF THE CROP INSURANCE SCHEMES" IN THE ADILABAD
J. Anitha (28-36)

6. HAZARDS OF ELECTRONIC WASTE AWARENESS AMONG HIGH SCHOOL STUDENTS
Suman Kumari Katoch (37-43)

7. CONCEPT AND EVOLUTION OF CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY IN INDIA
Vinod Raipure & Mrs. Rama Thuse (44-50)

8. EFFECT OF MARKET INFRASTRUCTURE FACTORS ON THE DEVELOPMENT OF NAIROBI SECURITIES EXCHANGE
Lucy Kalekye Musya & Fredrick M. Kalui (51-70)

9. HUMAN RESOURCE POLICIES – PRE AND POST LIBERALIZATION
Mr. A. B. Shah & Ms. Kirti Dharwadkar (71-74)

10. A STUDY ON TEACHING APTITUDE OF SECONDARY SCHOOL TEACHERS IN RELATION TO THEIR GENDER AND STREAM
Mallikarjun Kudavakkalagi & Prof. Premlata Sharma (75-78)

Scanned with CamScanner

11. ATTITUDE AND APTITUDE TOWARDS TEACHING PERFORMANCE OF TEACHER EDUCATORS IN B.ED COLLEGES
Vani Nayaki D. C. (79-82)

12. AN EVALUATIVE STUDY OF INVESTMENTS IN LARGE CAP EQUITY MUTUAL FUNDS THROUGH SYSTEMATIC INVESTMENT PLANS VIS-À-VIS LUMPSUM PAYMENTS
Ms. Eesha V. Deshpande (83-86)

13. NEED ANALYSIS OF CRITICAL THINKING SKILLS TRAINING IN COMPETITIVE EXAMINATIONSYOUTH ASPIRANTS
Ms. Savita Vivek Kulkarni & Radhika Narendra Inamdar (87-92)

14. IMPORTANCE OF TEACHING COMPETENCIES, PERSONALITY TRAITS, AND VALUES AMONG B.ED. TEACHERS TRAINEES
Mrs. Vandana Chaturvedi & N.K. Koushik (93-97)

15. MARITAL DISCORD OF PARENTS AND ITS INFLUENCE ON ADOLESCENTS' SELF ESTEEM, ANXIETY AND COPING STRATEGIES-AN INTERVENTION STUDY
T. Shantisree (98-106)

16. TO IDENTIFY IRRATIONAL BELIEFS, LOCUS OF CONTROL, QUALITY OF WORK LIFE AMONG NURSES WORKING IN GOVERNMENT AND CORPORATE HOSPITALS
Bantu Jhansi Priyadarshini (107-112)

17. TRUST BUILDING FACTORS IN THE ORGANISATION CONTEXT
Ram Surve (113-121)

18. FUTURE OF E-COMMERCE FOR DEVELOPMENT OF RURAL INDIA
Prof. Wani Murlidhar Namdeo (122-127)

19. A STUDY OF THE IMPACT OF COMMUNICATIVE ACTIVITIES ON THE DEVELOPMENT OF COMMUNICATIVE COMPETENCE IN WRITTEN ENGLISH OF SECONDARY SCHOOL LEARNERS
Lata S. More & Prof. Asif B. Khatik (128-130)

20. ISSUES IN INDIAN AGRICULTURAL POLICY AND RURAL DEVELOPMENT
Wani Murlidhar Namdeo (131-136)

21. शिक्षक सामाजिक बांधिलकी–एक अभ्यास
प्रा. प्रकाश अशोक जगताप (137-141)

22. उद्योजकता शिक्षणात शाळेची भुमिका
प्रा. प्रकाश अशोक जगताप (142-145)

Scanned with CamScanner

23. गढ़वाल हिमालय के हरियाला पवित्र भूस्थल में सामाजिक–सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रियाकलापों द्वारा जैवविविधता एवं जंगलों का संरक्षण
रमा मैखुरी & शंकर सिंह (146-152)

24. **माध्यमिक शिक्षकांच्या आत्म–प्रचितीचा अभ्यास**
शेखर प्रभाकर पाटील *(153-159)*

25. अभियांत्रिकी महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांमधील वैज्ञानिक मूल्यांचा अभ्यास
एन. एन. लांडगे & वैशाली आर सोनवणे (160-163)

26. **शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के संदर्भ में परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों का एक अध्ययन**
कुन्दन सिंह *(164-176)*

27. मोबाइल की आदत का शैक्षिक तनाव पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
संजीव कुमार & शैला जोशी (177-182)

Scanned with CamScanner

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES ISSN: 2319-4766
संजीव कुमार & शैला जोशी (177-182)

मोबाइल की आदत का शैक्षिक तनाव पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

संजीव कुमार[1] & शैला जोशी[2], Ph. D.

[1]शोध छात्र, बिड़ला परिसर, हे0न0ब0ग0केन्द्रीय वि0वि0, श्रीनगर गढ़वाल।

[2]सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड।

सारांश

संचार क्रान्ति के कारण भारतीय समाज में तेजी से परिवर्तन आया है। आधुनिक युग में बालक अब निष्क्रिय श्रोता नहीं रहा है, और न शिक्षा ही अब निष्क्रिय एवं अरुचिपूर्ण रह गयी है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों को सर्वाधिक रूप से प्रभावित किया है। किशोरो को स्मार्टफोन, इण्टनेट एवं मोबाइल ने अपना दास बना दिया है। जिस कारण विद्यार्थियों शैक्षिक तनाव ने व्यापक रूप से प्रभावित किया है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जहाँ एक ओर सूचना प्रौद्योगिकी के संसाधनो द्वारा बढ़ी है, वही दूसरी ओर कुछ विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव में वृद्धि करने का कारण भी बनी है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में होने वाली मोबाइल की आदत का उनके शैक्षिक तनाव पर प्रभाव पड़ने वाले का अध्ययन किया। न्यादर्श के चयन कि लिए श्रीनगर गढ़वाल के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में से 175 छात्र एवं छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के चयन के लिए स्वनिर्मित मोबाइल आदत मापनी एवं शैक्षिक तनाव के मापन के लिए सीमा रानी एवं डॉ0 बसन्त बहादुर सिंह द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। सांख्यकी के लिए माध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध का प्रयोग किया गया। निश्कर्श के आधार पर ज्ञात हुआ कि गैर सरकारी माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में सरकारी माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक तनाव विद्यमान है। कम मोबाइल की लत (आदत) वाले विद्यार्थियों में अधिक मोबाइल की लत (आदत) वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक तनाव है। विद्याथियों के मोबाइल की लत (आदत) एवं शैक्षिक तनाव के प्राप्तांकों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध है।

***मुख्य बिन्दू–** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, मोबाइल की लत, शैक्षिक तनाव आदि।*

प्रस्तावना–

वर्तमान समय में किशोर मोबाइल की लत के माध्यम से **'साइबर–बुलिंग'** की गिरफ्त में आ रहे हैं। साइबर–बुलिंग से तात्पर्य अश्लील भाषा, तस्वीरों व वीडियों से सम्बन्धित हैं। **बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप** के अध्ययन के मुताबिक, **''वर्श 2017 में भारत में करीब 13.4 करोड बच्चे मोबाइल फोन पर ऑनलाइन होंगे।''**

मोबाइल की लत किशोरों में ऐसी हो गयी है, कि 6 से 10 घन्टे लगातार मोबाइल पर सक्रिय रहते हैं। माध्यमिक स्तर अधिकतर किशोरावस्था के विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। इससे किशोरों में कई प्रकार के हार्मोनल बदलाव प्रदर्शित होते हैं जिस कारण बच्चे दूसरों में भावनात्मक लगाव तला ाते हैं। किशोरावस्था के बच्चों का सो ाल मीडिया के प्रति लगातार होने वाले आकर्शण से उनके शैक्षिक तनाव में लगातार वृद्धि हो रही है।

वास्तव में सोशल मीडिया (मोबाइल के प्रयोग) ने न केवल राश्ट्र बल्कि अर्न्तराश्ट्रीय स्तर को ऐसा मंच दिया है, जिसने सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को ग्लोबलाइजेशन की जाल में फंसा कर दिया है। मोबाइल के द्वारा वे बेझिझक बातें करते हैं, यहां तक कि देश विदेश की सूचनाओं का आदान–प्रदान भी करते है। वर्तमान समय में देखा जाये तो मोबाइल का व्यवसायिक क्षेत्र में प्रयोग

Scanned with CamScanner

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
RNI No.UPBIL/2016/67980
VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
Remarking An Analisation

माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा शिक्षण अनुदेशन में भाषाओं के औचित्य का विवरण

शैला जोशी
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय,
चिन्यालीसौंड़, उत्तरकाशी
उत्तराखण्ड

संजीव कुमार
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग,
बिड़ला परिसर,
हे0ब0न0ग0 केन्द्रीय वि0वि0,
श्रीनगर गढ़वाल

सारांश

प्राचीन काल मे शिक्षा के क्षेत्र में भारत विश्वगुरू के नाम से प्रतिष्ठित था, हमारी यह शिक्षा व्यावहारिक, व्यक्तित्व का विकास करने वाली एवं सत्य की खोज पर ही आधारित थी। वैदिक कालीन शिक्षा के दो ही स्तर थे– प्राथमिक (सामान्य) एवं उच्च शिक्षा, इसी प्रकार की स्थिति बौद्धकाल में भी रही किन्तु बौद्धकाल में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला तथा वल्लभी आदि कुछ विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई जिन्होने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का विश्व में डंका बजाया। मुगलकाल में भी मकतबों में प्रारंभिक शिक्षा तथा मदरसों में उच्च शिक्षा दी जाती थी। माध्यमिक शिक्षा की भारत में प्रारम्भ करने का श्रेय ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में इसाई मिशनरियों को जाता है। अंग्रेजों ने माध्यमिक शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु कार्य किये। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में तेजी से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन हुए, इनमें उचित समन्वय हेतु केन्द्रीय शिक्षा सलाहकाल बोर्ड ने भारत सरकार को माध्यमिक शिक्षा के उन्नयन हेतु एक आयोग गठित करने का सुझाव दिया, इसी कारण भारत सरकार ने 1952 में मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया प्रस्तुत आलेख में आयोग की भाषा सम्बन्धी सिफारिशों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : शिक्षण अनुदेशन, माध्यमिक शिक्षा आयोग।

प्रस्तावना

भारत को विदेशी आक्रान्ताओं ने सैकड़ों वर्ष तक गहरे घाव दिये, भारत की संस्कृति एवं गौरव को समाप्त करने में किसी ने कोई कसर न छोड़ी। अंग्रेज आखिरी शासक थे, जिनकी गुलामी से हम 1947 में स्वतंत्र हुए। स्वतन्त्रता के पश्चात सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामारिक हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करना भारत सरकार की मुख्य चुनौतियों में से एक थी दूसरी ओर निरक्षरता अन्मूलन भी एक समस्या थी। इस संदर्भ में यह भी सत्य है कि अंग्रेजी शासनकाल में ही आधुनिक भारतीय शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ। अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था ऐसे पढें लिखे भारतीय नवयुवकों को तैयार करना जो अंग्रेजी पढ़कर उनके शासन में सहायक सिद्ध हो सकें लार्ड मैकाले ने तो अपने विवरण पत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि 'अंग्रेजी की शिक्षा के द्वारा ऐसे भारतीय का निर्माण किया जा सकता है जो रक्त एवं रंग [illegible] है पर रूचियों विचारों नैतिकता एवं विद्वता में अंग्रेज होंगे[illegible]

अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्ता ने शिक्षण अनुदेशनों में भाषाओं के महत्व के अध्ययन [illegible] निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया।

1. माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा निर्धारित शिक्षण अनुदेशनों का [illegible] करना।
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा शिक्षण अनुदेशनों में भारतीय भाषा (हिन्दी एवं संस्कृत) के औचित्यों का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक शिक्षा आयोग द्वारा शिक्षण अनुदेशनों में विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के औचित्यों का अध्ययन करना।

माध्यमिक शिक्षा का इतिहास

भारत में माध्यमिक शिक्षा को प्रारम्भ करने का पूरा श्रेय ईसाई मिशनारियों को ही जाता है। इन्होंने ही 18 वी0 शताब्दी के उत्तरार्द्ध में देश के कुछ हिस्सों में माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की बाद में इन्हीं के कार्यों से प्रेरित होकर 19वी0 शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ भारतीयों ने भी माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की। यदि हम भारतीय शिक्षा के इतिहास की ओर